MEERA

HOSPITAL

5. क्या मंदिर

में जाने से

हमारी पाँचों इन्द्रियाँ

तृप्त होती हैं?

प्रश्नः- मन्दिर में हम क्यों जाते हैं ?

उत्तरः- भगवान के दर्शन करने के लिए।

प्रश्नः- भगवान के दर्शन करने से क्या होता है ?

उत्तरः- मन को संतोष होता है कि
हमें भगवान के दर्शन हो गए।

परन्तु जरा गहराई से सोचें कि और क्या होता है ?

हमारी पाँच इन्द्रियाँ हैं

1. आँखें देखने के लिए,
2. कान सुनने के लिए,
3. नाक सूँघने के लिए,
4. जिव्हा स्वाद लेने के लिए,
5. त्वचा स्पर्श करने के लिए।

इन पाँचों इन्द्रियों की तृप्ति
सात्विक रूप से देखें कैसे होती है ?

जब हम भगवान का सजा-धजा रूप देखते हैं,

तब हमारी आँखें-चक्षुन्द्रिय तृप्त हो जाती हैं।

जब हम भगवान के मधुर मधुर भजनों को सुनते हैं,

तब हमारे कान-श्रोतेन्द्रिय तृप्त हो जाती हैं।

जब भगवान पर चढ़ाए फूलों और इत्र की खुशबू नाक में आती है,

तब हमारी नाक-घ्राणेन्द्रिय तृप्त हो जाती है।

जब हमें भगवान का प्रसाद मिलता है और उसे मुँह में रखते हैं,

तब हमारी जिव्हा-रसेन्द्रिय तृप्त हो जाती है।

जब हमें भगवान का स्पर्श करने का अवसर मिलता है,

तब हमारी त्वचा- स्पर्शेन्द्रिय तृप्त होती है।

इन पाँचों इन्द्रियों की तृप्ति तामसिक रूप से कैसे होती है ?

जब कोई वैश्या का सजा-धजा रूप देखता है,

तब उसकी आँखें-चक्षुन्द्रिय तृप्त हो जाती हैं।

जब कोई वैश्या के मधुर गीत-गजलों को सुनता है,

तब उसके कान-श्रवणेन्द्रिय तृप्त हो जाते हैं।

जब कोई कलाइयों में बाँधे फूलों के गजरों और इत्र की खुशबू सूंघता है,

तब उसकी नाक-घ्राणेन्द्रिय तृप्त हो जाती है।

जब कोई मदिरा और अंगूर, मेवा को मुँह में रखता है,

तब उसकी जिव्हा-रसेन्द्रिय तृप्त हो जाती है।

जब वैश्या के शरीर को स्पर्श करने का अवसर मिलता है,

तब उसकी त्वचा- स्पर्शेन्द्रिय तृप्त होती है।

किसी भक्त ने ठीक ही कहा है:-

भूखे पेट नहीं होय भजन गोपाला ।
ले यह अपनी कंठी माला ।।

क्योंकि जब तक हमारी पाँचों इन्द्रियों की तृप्ति नहीं होती है, तब तक हम इनसे उपर उठकर नहीं सोच सकते हैं। हमारा मन इन इन्द्रियों को तृप्त करने में ही उलझा रहेगा।

परन्तु जैसे ही हमारी पाँचों इन्द्रियों की तृप्ति हो जाए, हमें यह चाहिए कि हम तुरन्त ही भगवान के दिए गए निर्देशों पर चलना शुरू कर देवें। यदि हम भोग-विलास में ही अपना जीवन बिता देंगे, तब हमारा यह अनमोल जीवन, सच में ही व्यर्थ चला जावेगा।

You can
Contact me on -

93148 77066

0141-220 2220
220 2748
400 1653

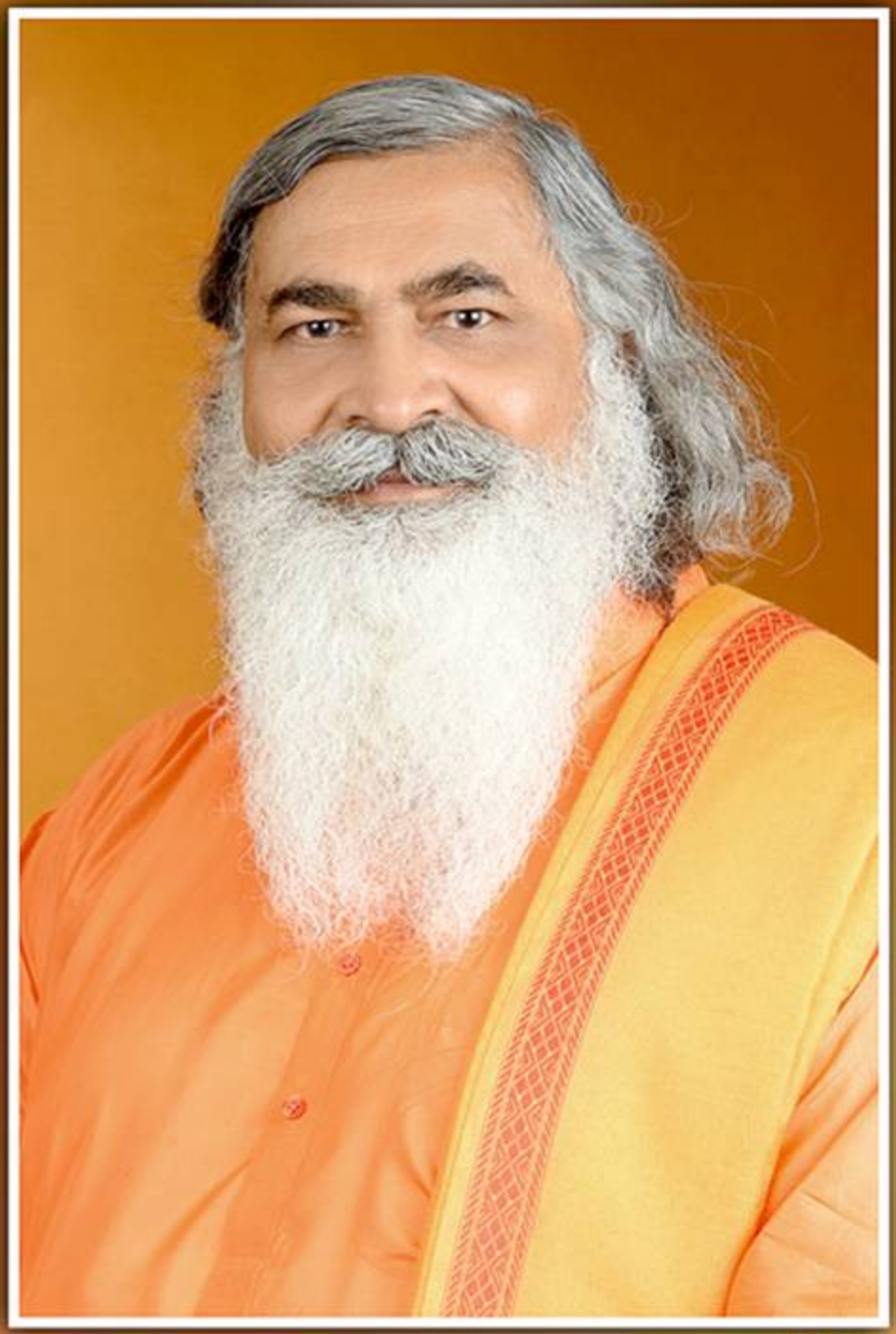

Thank You